DETAILS EXPLANATIONS

Paper Code : RPSCEE38 | : RPSCCE38 | RPSCME38

[अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) दावानल (ii) प्रतीक
(ख) (i) शश + अंक (ii) तथा + अपि

2. **(क)** (i) भूपति (ii) लोकभय
(ख) (i) सर्व में उत्तम (ii) सूर्य का मण्डल

3. **(क)** (i) निरादर (ii) परनाना
(ख) (i) अन (ii) कु

4. **(क)** (i) गौरव (ii) गुरुत्व
(ख) (i) अक (ii) ता

5. **(क)** (i) घोड़ा (ii) शुभ
(ख) (i) व्यय (ii) महान्

6. (i) वाद – हमला (ii) गीला – पेड़

7. (i) घसियारा (ii) खगोलशास्त्र
(iii) अन्तेवासी (iv) हरावल

8. (i) कौतुक (ii) कृति
(iii) क्षीण (iv) खुश

9. (i) किसी ने कहा था।
(ii) हमारे प्रान्त के लोग मेहनती हैं।
(iii) पुस्तकों में यह श्रेष्ठ है।
(iv) मैंने सारी पुस्तक पढ़ डाली।

10. (i) **अर्थ** : बहुत तीव्र गति से चलना।
वाक्य में प्रयोग : कृष्णा साईकिल क्या चलाता है, वह तो हवा से बातें करता है।

(ii) **अर्थ** : लड़की का विवाह करना।
वाक्य में प्रयोग : अब तो एक लड़की और बची है, उसके हाथ पीले कर दूँ तो गंगा नहालूँ।

(iii) **अर्थ** : किसी कार्य में जमना, बजबत होना।
वाक्य में प्रयोग : उसके दस वर्ष तो संघर्ष में बीते किन्तु व्यापार में अब उसकी जड़ जम चुकी है।

(iv) **अर्थ** : प्राणों को संकट में डालना।
वाक्य में प्रयोग : वह जान पर खेलकर भी बच्चों को जलते मकान से बचा लाई।

(v) **अर्थ** : महत्वपूर्ण संबल।
वाक्य में प्रयोग : राजनीतिक भी विचित्र है। जो आज किसी का दाहिना हाथ है, कल वही उसका शत्रु हो जाता है।

(vi) **अर्थ** : कठिन काम होना।

वाक्य में प्रयोग : हॉकी में भारत से जीतना टेडी खीर है।

(vii) **अर्थ** : कठोर परिश्रम करना।

वाक्य में प्रयोग : राजेश ने प्रतियोगिता जीने के लिए दिन–रात एक कर दिया।

(viii) **अर्थ** : प्रतिष्ठित हो जाना।

वाक्य में प्रयोग : समाचारों की निष्पक्षता के बारे में सारी दुनिया में आज भी बी.बी.सी. लंदन का डंका बजता है।

11. (i) **अर्थ** : प्रत्येक कार्य बिना एक प्रक्रिया और समय के पूर्ण नहीं होता।

वाक्य में प्रयोग : टेलीविजन बनाना सीखने में एक वर्ष का प्रशिक्षण चाहिए। आप यदि यह सोचते हैं कि दो महिने में सीख लेगें तो संभव नहीं है। जनाब हथेली में सरसों नहीं उगा करती।

(ii) **अर्थ** : साझेदारी जब समाप्त होती है तो सबके सामने उजागर होती है।

वाक्य में प्रयोग : शुभम और दिनेश में सांझे की दुकान के बाबत झगड़ा हो गया तो सारा बाजार जान गया, सारी उधार डूब गई, किसी को लाभ नहीं हुआ। सच ही कहा है कि सांझे की हाँडी चौराहे पर फूटती है।

(iii) **अर्थ** : कष्ट सहन करने से ही सम्मान मिलता है।

वाक्य में प्रयोग : महात्मा गाँधी देश का आजादी दिलाने के लिए कई बार वर्षों जेल में रहे, महीनों का उपवास किया और कष्ट सहा। सच है हजारों टाँकियाँ सहकर मादेव बनते है।

(iv) **अर्थ** : प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या।

वाक्य में प्रयोग : जंगलों से इस समय भी लकडियाँ काटी जा रही हैं। आप हमारे साथ अभी चलिए और देख लीजिए। हाथ कंगन को आरसी क्या?

(v) **अर्थ** : जो कमजोर है उसका हर कोई शोषण कर लेता है।

वाक्य में प्रयोग : जनता सोचने लगी है कि सरकार कोई भी आए, टैक्स का भार कोई कम नहीं करता। सच है भेड की ऊन कोई नहीं छोड़ता।

(vi) **अर्थ** : मामूली आदमी द्वारा अपनी क्षमता का काम करने में भी रखरे करना।

वाक्य में प्रयोग : किसान ने कहा कि धूप में काम नहीं करूँगा, लू लग जाएगी। वहा! मेढ़की को भी जुकाम होने लग गई।

(vii) **अर्थ** : काम बिगढ़ जाने पर यह कहना कि यह तो किया ही ऐसे गया था।

वाक्य में प्रयोग : फेल हो गया तो परमोद कहता है, डिवीजन खराब हो रहा था इसलिए जानबूझकर फेल हो गया। यह तो बात हुई कि फिसल पड़े तो हर गंगा।

(viii) **अर्थ** : अवांछित एवं अनुचित हस्तक्षेप करना।

वाक्य में प्रयोग : पति–पत्नी में नोंक–झोंक हो रही थी। पडोसिन ने टोका कि आपस में क्यों लड–झगड़ रहे हो। पत्नी ने तपाक से जवाब दिया कि हम आपस में सुलट लेंगें आप दाल–भत में मूसलचन्द क्यों?

12. (i) संगृहाध्यक्ष (ii) निवारण
(iii) सत्य निष्ठा / गम्भीर (iv) निरस्त करना
(v) पृष्ठ संख्या डालना (vi) छोड़ा गया
(vii) गिनना (viii) अर्हता / योग्यता

[अनुभाग-ब]

13. (i) लोकमान्य की जेलीय यन्त्रणाएँ या लोकमान्य की जेल में मानसिक स्थिति।
(ii) लोकमान्य ने कारावास में छः वर्ष बिताए।
(iii) लोकमान्य तिलक को कारावास में सांत्वना देने वाली वस्तु किताबें थी।
(iv) कारावास में लोकमान्य तिलक को शारीरिक, मानसिक यन्त्रणाओं से गुजरना पड़ा।

14. (i) पापी का मन सदा शंकित रहता है।
जो व्यक्ति कोई भी और किसी भी प्रकार का गलत कार्य करता है, उस व्यक्ति का मन स्वतः ही अज्ञात भय से ग्रस्त रहता है क्योंकि उसे हमेशा ऐसी अनुभूति होती रहती है कि किसी ने भी मुझे बुरा करते हुए देख लिया तो वह मुझे अवश्य ही टोक देगा।

(ii) बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।
क्रोध मनुष्य का एक ऐसा मनोभाव है जिसको करने से वैर बढ़ता है। जिस पर हम क्रोध करते हैं, उसका हम भला नहीं करते हैं। उसके प्रति तो हमारे मन में ही जागती है। जैसे सेव के मुरब्बो में सेव की ही फाँके दुर्भावना होती है, वैसे ही वैर–भाव से क्रोध ही बढ़ता है।

17. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना 1961 में राष्ट्रपति के आदेश से की गई थी। आयोग को शब्दावली निर्माण के सिद्धांत निश्चित करने, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध शब्दावली का संग्रह और समन्वय करने, अनुमोदित शब्दावलियाँ तैयार करने, विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तके एवं संदर्भ ग्रंथों का प्रणयन तथा प्रकाशन करने आदि का काम सौंपा गया था। इस प्रकार, उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी एवं अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए विविध उपाय अपनाना आयोग के कार्यक्षेत्र में था।